शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 198-204
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :
डॉ. चन्द्र भूषण
सहायक प्राध्यापक (वरीय), संस्कृत विभाग, एस एल के कालेज, सीतामढ़ी.

Corresponding Author :
डॉ. चन्द्र भूषण
सहायक प्राध्यापक (वरीय), संस्कृत विभाग, एस एल के कालेज, सीतामढ़ी.

संस्कृत व्याकरणशास्त्र और भाषाविज्ञान

शोधसार : किसी भी भाषा के साधु ज्ञान के लिए उस भाषा के व्याकरण को जानना अत्यन्त आवश्यक होता है। इसीलिए भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन काल से ही व्याकरणाध्ययन पर बल दिया जाता है। व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहा गया है- **"शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्"।** महाभाष्यकार ने व्याकरण को वेदांगों में प्रधान बताया है। व्याकरण शब्द "वि" एवं "आङ्" उपसर्गपूर्वक "डुकृञ करणे" धातु से ल्युट् प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है – **"व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेनेति व्याकरणम्"** अर्थात् जिस शास्त्र में प्रकृतिप्रत्ययविभागद्वारा व्यवहार्य शब्दों का विश्लेषण किया जाता है वह व्याकरणशास्त्र है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही व्याकरण की रचना होती रही है। ब्रह्मा को व्याकरण का आदि प्रवक्ता माना जाता है। तदनन्तर बृहस्पति प्रभृति अनेक वैयाकरण हुए परंतु उनमें आचार्य पाणिनि विशिष्ट है। उनका शब्दानुशासन **अष्टाध्यायी** संस्कृत का मूर्धन्य व्याकरण है। भाषाविज्ञान पाश्चात्य विद्वानों के मस्तिष्क की देन है। **भाषाविज्ञान** भाषा के अध्ययन की वह शाखा है जिसमें भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास आदि का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। आधुनिक विषय के रूप में भाषाविज्ञान का सूत्रपात यूरोप में सन् 1786 ईस्वी में **सर विलियम जोन्स** नामक विद्वान् द्वारा किया गया माना जाता है। संस्कृत भाषा के अध्ययन के प्रसंग में जोन्स ने ही सर्वप्रथम संस्कृत, ग्रीक और लैटिन भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए इस संभावना को व्यक्त किया था कि इन भाषाओं के मूल में कोई एक भाषा रुप ही आधार बना हुआ है। भाषाओं का इस प्रकार का तुलनात्मक अध्ययन ही आधुनिक भाषाविज्ञान के क्षेत्र का पहला कदम बना। दोनों के भाषा के अध्ययन क्षेत्र की बात करें तो भाषाविज्ञान एक व्यापक अवधारणा है जिसकी विषय-वस्तु के रूप में सभी मानव भाषाएं आ जाती हैं। इसके विपरीत व्याकरण का संबंध किसी एक भाषा से होता है अर्थात् प्रत्येक भाषा का अलग अलग स्वतंत्र व्याकरण होता है जबकि भाषाविज्ञान में ऐसी पद्धतियों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है जिनका प्रयोग

सभी प्रकार की मानव भाषाओं के विश्लेषण में किया जा सके।

कुंजी शब्द – व्याकरण, वेदांग, भाषाविज्ञान, अवधारणा, सूत्रपात, विश्लेषण, पद्धति।

भाषाविज्ञान का सामान्य परिचय : भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन जिस शास्त्र में किया जाता है, उसे भाषाविज्ञान कहते हैं। भाषाविज्ञान भाषा के अध्ययन की वह शाखा है जिसमें भाषा की उत्पत्ति, स्वरुप, विकास आदि का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। अध्ययन के अनेक विषयों में से आजकल भाषाविज्ञान को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। अपने वर्तमान स्वरुप में भाषाविज्ञान पाश्चात्य विद्वानों के मस्तिष्क की देन कहा जाता है। आधुनिक विषय के रूप में भाषाविज्ञान का सूत्रपात यूरोप में सन् 1786 ईस्वी में **सर विलियम जोन्स** नामक विद्वान् द्वारा किया गया माना जाता है। संस्कृत भाषा के अध्ययन के प्रसंग में जोन्स ने ही सर्वप्रथम संस्कृत, ग्रीक और लैटिन भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए इस संभावना को व्यक्त किया था कि संभवतः इन तीनों भाषाओं के मूल में कोई एक भाषा रूप ही आधार बना हुआ है। अतः इन तीनों भाषाओं (संस्कृत, ग्रीक और लैटिन) के बीच एक सूक्ष्म सम्बन्ध सूत्र अवश्य विद्यमान है। भाषाओं का इस प्रकार का **तुलनात्मक अध्ययन** ही आधुनिक भाषाविज्ञान के क्षेत्र का पहला कदम बना।[1]

भाषाविज्ञान की अध्ययन-पद्धति

वर्णनात्मक या विवरणात्मक भाषाविज्ञान (Descriptive linguistics) : वर्णनात्मक भाषाविज्ञान के अंतर्गत किसी एक भाषा के किसी एक काल में ध्वनि, रुप, शब्द, अर्थ एवं वाक्य-गठन आदि का वर्णन किया जाता है।[2] यही विधा जब अधिक विश्लेषणात्मक हो जाती है तो **संरचनात्मक भाषाविज्ञान** के नाम से पुकारी जाती है।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान (Historical Linguistics) : ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के अंतर्गत किसी भाषा के इतिहास या विकास का अध्ययन किया जाता है तथा सिद्धान्त की दृष्टि से विकास या परिवर्तन के सिद्धान्तों,नियमों तथा कारणों आदि का उल्लेख किया जाता है।[3]

तुलनात्मक भाषाविज्ञान (Comparative Linguistics) : तुलनात्मक भाषाविज्ञान के अंतर्गत दो या दो से अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।[4]

प्रायोगिक भाषाविज्ञान (Applied Linguistics) : इस विधा का सम्बन्ध भाषाविज्ञानेतर क्षेत्रों में भाषाविज्ञान के प्रयोग से है। इसमें मातृभाषा या किसी अन्य भाषा की शिक्षा कैसे दें, अनुवाद कैसे करें, टाइपराइटर के की-बोर्ड में क्या क्रम रखें, उच्चारण की गड़बड़ी कैसे सुधारें आदि विषयों का विचार किया जाता है।[5]

भाषाविज्ञान का अध्ययन-क्षेत्र : मानव की भाषा का जो क्षेत्र है वही भाषाविज्ञान का क्षेत्र है। संसार के सभ्य – असभ्य मनुष्यों की भाषाओं और बोलियों का अध्ययन भाषाविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है। इस प्रकार भाषाविज्ञान केवल सभ्य – साहित्यिक भाषाओं का ही अध्ययन नहीं करता है अपितु असभ्य – असाहित्यिक भाषाओं व बोलियों का, जो प्रचलन में नहीं हैं, अतीत के गर्भ में खोई हुई हैं उनका भी अध्ययन करता है।[6]

भाषाविज्ञान के अध्ययन के विभाग : भाषा से सम्बन्धित अध्ययन के प्रधान तथा गौण दो विभाग किए गए हैं –

प्रधानविभाग :

1. **वाक्यविज्ञान (Syntax)** – हमारे विचार – विनिमय का आधार वाक्य होते हैं। भाषाविज्ञान के जिस विभाग में इस पर विचार किया जाता है, उसे वाक्यविज्ञान कहते हैं। इसके तीन रुप हैं – (1) वर्णनात्मक वाक्यविज्ञान, (2) ऐतिहासिक वाक्य विज्ञान (3) तुलनात्मक वाक्यविज्ञान।[7]

2. **रुपविज्ञान (Morphology)-** वाक्य की रचना पदों या रुपों के आधार पर होती है। अतः वाक्य के बाद पद या रुप का विचार महत्त्वपूर्ण हो जाता है। रुपविज्ञान के अंतर्गत धातु, उपसर्ग, प्रत्यय, शब्द, विभक्ति आदि उन सभी उपकरणों पर विचार किया जाता है जिनसे रुप बनते हैं। इसके भी तीन प्रकार हैं – वर्णनात्मक, ऐतिहासिक

तथा तुलनात्मक। इसे पदविज्ञान, पद-रचना-शास्त्र या रूपविचार भी कहते हैं।[8]

3. **शब्द विज्ञान (Wordology)** – रूप या पद का आधार शब्द है। शब्द विज्ञान के अंतर्गत रचना या इतिहास की दृष्टि से शब्दों पर विचार किया जाता है। किसी व्यक्ति या भाषा का विचार भी इसके अंतर्गत किया जाता है। कोश – निर्माण तथा व्युत्पत्ति-शास्त्र शब्दविज्ञान के ही विचार – क्षेत्र की सीमा में आते हैं।[9]

4. **ध्वनिविज्ञान** (**Phonology)** – शब्द का आधार ध्वनि है। ध्वनिविज्ञान के अंतर्गत ध्वनियों का अनेक प्रकार से अध्ययन किया जाता है। इसके अंतर्गत ध्वनिशास्त्र (Phonetics) एक अलग से उपविभाग है जिसमें ध्वनि उत्पन्न करने वाले अंगों मुख-विवर, नासिका – विवर, स्वर तंत्री, ध्वनि यंत्र के साथ साथ सुनने की प्रक्रिया का भी अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन के दो रूप है – ऐतिहासिक और तुलनात्मक।[10] ग्रिम नियम का सम्बन्ध इसी से है।

5. **अर्थविज्ञान (Semantics)** – वाक्य के बाह्य अंग ध्वनि पर समाप्त हो जाते हैं यह भाषा के बाह्य कलेवर है इसके आगे उसकी आत्मा का क्षेत्र प्रारम्भ होता है जिसे हम अर्थ कहते हैं। अर्थ रहित शब्द आत्मा-रहित शरीर की भांति व्यर्थ होता है। अतः अर्थ भाषा का एक महत्त्वपूर्ण अंग होता है। अर्थविज्ञान के अंतर्गत शब्दों के अर्थों के विकास तथा उसके कारणों पर विचार किया जाता है।[11]

गौण विभाग :

1. **भाषाओं का वर्गीकरण** : भाषा के प्राचीन विभाग (वाक्य, रूप, शब्द, ध्वनि एवं अर्थ) के आधार पर संसार की समस्त भाषाओं का अध्ययन करके उन्हें विभिन्न वर्गों या कुलों में विभाजित किया जाता है।[12]

2. **भाषा की उत्पत्ति** : भाषाविज्ञान का सबसे प्रथम, स्वाभाविक, महत्त्वपूर्ण किन्तु विचित्र प्रश्न भाषा की उत्पत्ति का है। इस पर विचार करके विद्वानों ने उत्पत्ति के अनेक सिद्धान्तों का निर्माण किया है।[13]

अन्य क्षेत्र : भाषा-अध्ययन के अन्य क्षेत्र निम्न प्रकार हैं -

3. व्युत्पत्तिशास्त्र
4. शब्द समूह
5. लिपि
6. प्रागैतिहासिक खोज
7. भाषाविज्ञान का इतिहास

भाषाविज्ञान और व्याकरण में सम्बन्ध : व्याकरण और भाषाविज्ञान दोनों ही भाषा के स्वरुप का विवेचन प्रस्तुत करते हैं। अतः दोनों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है तथापि दोनों में पर्याप्त साम्य और वैषम्य है। व्याकरण शब्द की व्युत्पत्ति बताकर उसके स्वरुप का परिचय देता है जबकि भाषाविज्ञान भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि पर संस्कृत व्याकरण और भाषाविज्ञान दोनों में विचार किया जाता है। भाषाविज्ञान अनेक भाषाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है जबकि व्याकरण किसी भाषा-विशेष का अध्ययन करता है। व्याकरण शुद्ध या अशुद्ध का प्रयोग बतलाता है जैसा कि वाक्यपदीयम् में कहा गया है – **"साधुत्वज्ञानविषया सैषा व्याकरणस्मृतिः"**।[14] व्याकरण शब्द का अर्थ ही है व्याकृति अर्थात् प्रकृति – प्रत्यय के विभाग द्वारा शब्द का विवेचन कर उसकी आकृति दिखाना – **"व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्**"।

प्राचीन काल में व्याकरण और भाषाविज्ञान में अधिक अन्तर नहीं माना जाता था। इसी से भाषाविज्ञान को तुलनात्मक व्याकरण कहा जाता था। वस्तुतः भाषाविज्ञान विज्ञान की कोटि में आता है जबकि व्याकरण शास्त्र है।[15]

भाषा – अध्ययन का उद्भव एवं विकास : भाषा पर अत्यन्त प्राचीन काल से ही अध्ययन होता चला आ रहा है। विश्व में सबसे प्राचीन अध्ययन प्राचीन वैदिक साहित्य में पाया जाता है।[16] भारत के अतिरिक्त अरब, चीन, जापान

आदि देशों में अध्ययन किया गया। वर्तमान समय में यूरोप और अमेरिका में भाषाविज्ञान पर पर्याप्त कार्य किया गया है।

भारत में भाषा पर अध्ययन भाषाविज्ञान के नाम से न होकर अन्यरूपों में होता रहा है। भारतीय प्राचीनतम वैदिक साहित्य में भाषा के चिन्तन का मूल प्राप्त होता है। कृष्णयजुर्वेद संहिता में देवों के द्वारा इन्द्र से की प्रार्थना कि "हम लोगों के कथन को टुकड़ों में बाँट दीजिए" यह प्रकट करता है कि वाक्य को विभाजित किया जा सकता है।[17] ब्राह्मण ग्रन्थों में व्यावहारिक रूप से भाषा सम्बन्धी कार्य प्राप्त होते हैं। पदपाठ, प्रातिशाख्य, शिक्षा, निघण्टु, निरुक्त आदि भाषा के रुप की विवेचना करते हैं। निरुक्त अर्थ-विचार की दृष्टि से सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसी में यास्क ने सिद्ध किया है कि प्रत्येक संज्ञा की व्युत्पत्ति किसी न किसी धातु से है।[18]

भारत में भाषा – अध्ययन के प्राचीन कार्य : भारत में भाषा पर किए गए प्राचीन कार्य वैदिक काल से लेकर 17 वीं शताब्दी तक सम्मिलित किए जाते हैं।[19]

वेद – वेद विश्व के प्राचीनतम साहित्य है जिनमें भाषाविज्ञान से सम्बन्धित अनेक तथ्य प्राप्त होते हैं। भारतीय परम्परा में समस्त ज्ञान- विज्ञान का आदि स्रोत वेद को ही स्वीकार किया गया है। मनुस्मृति में वेद को सर्वज्ञानमय कहा गया है[20]। वाक्यपदीय में भी वेद को सभी विद्याओं का मूल स्वीकार किया गया है[21]। वेदों को श्रुति कहा गया है क्योंकि शताब्दियों तक वेदों का मौखिक रूप वंशपरम्परा से चलता रहा। भारतीय मनीषियों ने वेदों के रूप, वैदिक भाषा तथा ध्वनियों को विशुद्ध रखने के लिए विभिन्न वर्गीकरण किए। शब्दों के पदपाठ बनाए। वैदिक शब्दों के शुद्ध उच्चारण तथा पढ़ने - पढ़ाने आदि प्रयोजनों के लिए शिक्षाशास्त्र बनाया। वेद – पाठ भेद को व्यवस्थित रखने के उद्देश्य से प्रातिशाख्यों का निर्माण हुआ। शब्दों का साधु ज्ञान, वाक्यरचना आदि के लिए व्याकरण की रचना की गई। भिन्न – भिन्न शब्दों के समुचित अर्थ को जानने के लिए निरुक्त की रचना की गई। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वेदों के छः अंगों – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष में से शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त भाषाविज्ञान से सम्बन्धित तथ्य हैं।[22]

ब्राह्मण : संहिताओं के बाद की कृतियों को ब्राह्मण ग्रन्थ कहा जाता है। इन ग्रन्थों में कहीं कहीं शब्दों के अर्थ समझाने के प्रयत्न किए गए हैं जो अल्पमात्रा में हैं किन्तु इनसे ब्राह्मण ग्रंथों में भाषा के अपेक्षाकृत वैज्ञानिक अध्ययन की पुष्टि होती है।[23]

पदपाठ : वैदिक काल में पदपाठ के द्वारा भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का सूत्रपात हो चुका था। इसके रचयिता शाकल्य थे। इन्होंने सर्वप्रथम मन्त्रों को पदों (शब्दों) में विभाजित किया था। प्रत्येक पद को एक दूसरे से पृथक् प्रस्तुत किया गया है तथा समास और संधि का विग्रह किया गया है। स्वराघात और संधियों पर भी विचार किया गया।[24]

प्रातिशाख्य : वैदिक मन्त्रों की उच्चारण – शुद्धता की दृष्टि से प्रातिशाख्यों की रचना की गई। प्रत्येक वेद की शाखाओं के अनुसार हर शाखा के शब्द, ध्वनि आदि का वर्गीकरण कर प्रातिशाख्यों में प्रस्तुत किए गए। प्रातिशाख्यों के प्रमुख उद्देश्य थे – अपनी अपनी संहिताओं के मूल उच्चारण को सुरक्षित रखना।[25] इस उद्देश्य के लिए मात्रा, काल, स्वराघात तथा उच्चारण संबंधी विश्लेषण हुआ।

शिक्षा : शिक्षा को वेदपुरुष का घ्राण (नाक) कहा गया है।[26] स्वर एवं वर्ण आदि के उच्चारण-प्रकार की जहाँ शिक्षा दी जाती हो, उसे शिक्षा कहा जाता है।[27] इनको ध्वनिशास्त्र भी कहा जाता है। शिक्षा का उद्भव और विकास वैदिक मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण और उनके द्वारा उनकी रक्षा के उद्देश्य से हुआ है।

निरुक्त : निरुक्त को वेदपुरुष का श्रोत्र कहा गया है।[28] निरुक्त के रचनाकार आचार्य यास्क हैं। इसमें निघण्टु की व्याख्या की गई है। निघण्टु के प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति तथा उसके अर्थ पर विचार किया गया है। निघण्टु में वैदिक शब्दों का संग्रह है। निरुक्त व्युत्पत्तिशास्त्र का प्राचीनतम ग्रन्थ है।

व्याकरण : इससे प्रकृति और प्रत्यय आदि के योग से शब्दों की सिद्धि और उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित स्वरों की

स्थिति का बोध होता है। वेदों के रक्षार्थ[29] तथा शब्दों का यथार्थ ज्ञान हो सके अतः इसका अध्ययन आवश्यक होता है। इस सम्बन्ध में पाणिनीय व्याकरण ही इस वेदांग का प्रतिनिधित्व करता है। व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहा गया है – **"मुखं व्याकरणं स्मृतम्"।** महाभाष्यकार पतंजलि ने भी व्याकरण को वेदांगों में प्रधान कहा है।[30] वाक्यपदीयकार भर्तृहरि ने भी व्याकरण को वेदांगों में महत्त्वपूर्ण स्वीकारा है।[31]

व्याकरण – प्रवचन – परम्परा : भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही व्याकरण ग्रंथों की रचना होती रही है।[32] ब्रह्मा को व्याकरण का आदि प्रवक्ता माना जाता है। ब्रह्मा ने यह ज्ञान बृहस्पति को, बृहस्पति ने इन्द्र को, इन्द्र ने भरद्वाज को, भरद्वाज ने ऋषियों को, ऋषियों ने ब्राह्मणों को दिया।[33] ब्रह्मा द्वारा प्रारब्ध इस ज्ञान को परवर्ती काल में अनेक वैयाकरणों ने शास्त्रबद्ध किया।

पाणिनि और उनका शब्दानुशासन : पाणिनि विश्व के महान् वैयाकरणों में अग्रगण्य है। आपने **"अष्टाध्यायी"** नामक एक अपूर्व व्याकरण की रचना की। यह सम्प्रति संस्कृत भाषा का उपलब्ध उत्कृष्ट व्याकरण ग्रन्थ है जिसमें लौकिक तथा वैदिक उभयविध भाषा का विवेचन किया गया है।

इस तरह का उत्तम कोटि का व्याकरण विश्व की अन्य भाषाओं में नहीं मिलता। भाषाविज्ञान की दृष्टि से यह कृति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें 8 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में चार – चार पाद है। इसप्रकार कुल 32 पाद हैं। इसमें लगभग 4 हजार सूत्र हैं।[34]

विशिष्टता : अष्टाध्यायी की निम्न विशिष्टताएँ हैं जो पाणिनि के अप्रतिम बुद्धि कौशल को प्रकट करती हैं –

1. पाणिनि ने अष्टाध्यायी में सूत्रपद्धति का प्रयोग करके संस्कृत जैसी जटिल और दुरुह भाषा के व्याकरण को संक्षिप्त कर दिया है।
2. इन्होंने भाषा में वाक्य को प्रमुख माना है, पद को नहीं।[35]
3. पाणिनि ने पद (शब्द) को सुबन्त और तिङन्त इन दो भागों में विभक्त किया है।[36]
4 सभी शब्दों की व्युत्पत्ति धातुओं से ही हुई है जो क्रिया का अर्थ बतलाती हैं। इसमें उपसर्ग और प्रत्यय की सहायता से नए शब्द सिद्ध किए जाते हैं।
5 पाणिनी ने अष्टाध्यायी में लौकिक और वैदिक उभयविध संस्कृत का तुलनात्मक विवेचन किया है।[37]
6. स्थान व प्रयत्न की दृष्टि से पाणिनि ने ध्वनियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण किया है जो ध्वनिविज्ञान की दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।[38]
7. अष्टाध्यायी वर्णनात्मक भाषाविज्ञान की प्रतिनिधि रचना है।[39]

भाषा के प्रवाह में आए नवीन शब्दों को व्याकरण में स्थान देने के लिए अष्टाध्यायी के लगभग 1500 सूत्रों पर कात्यायन (350 ई0 पू0) ने 4000 **वार्तिकों** की रचना की। पतंजलि (150 ई0 पू0 के लगभग) ने इन वार्तिकों पर **"महाभाष्य"** नामक विस्तृत व्याख्या लिखी। इन तीनों द्वारा **अष्टाध्यायी** को उत्कृष्ट व्याकरणग्रन्थ का रुप दिया गया तथा यह ग्रन्थ **"त्रिमुनि व्याकरणम्"** के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

पाणिनि न केवल भारत के, अपितु संसार के सबसे बड़े भाषाविज्ञानी हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम वर्णनात्मक रुप में भाषा का विशद एवं व्यापक अध्ययन किया। कात्यायन एवं पतंजलि भी इसी कोटि में आते हैं। पाणिनि से प्रभावित होकर ग्रीक विद्वानों में थ्रैक्स, डिस्कोलस तथा इरोडियन ने भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। ब्लूमफील्ड (अमेरिका) ने 1932 में **लैंग्वेज** नामक अपना ग्रन्थ प्रकाशित कर वर्णनात्मक भाषाविज्ञान के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। तदनन्तर पाश्चात्य देशों विशेषकर अमेरिका में वर्णनात्मक भाषाविज्ञान का आशातीत विकास हुआ है।

निष्कर्ष : इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्याकरणशास्त्र और भाषाविज्ञान भाषा के स्वरुप का अध्ययन करते हैं। अतः दोनों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है तथापि उनमें पर्याप्त समानता और असमानता है। भाषाविज्ञान जहां अर्वाचीन है वहीं व्याकरण अत्यन्त प्राचीन है। भारतवर्ष में अत्यन्त प्राचीन काल से ही भाषा-अध्ययन सम्बन्धी

प्रवृत्ति संस्कृत-वाङ्मय में पाई जाती है। भाषाविज्ञान के विभिन्न तत्त्वों रुप, वाक्य, ध्वनि, अर्थ आदि पर विशद एवं व्यापक विचार हुआ है। प्रातिशाख्य और शिक्षाशास्त्रों में ध्वनि – सम्बन्धी विचार, निरुक्त में शब्दों की व्युत्पत्ति के साथ उनके अर्थ पर व्यापक व गंभीर विचार तथा पाणिनीय व्याकरण में वर्णनात्मक रुप में भाषा का विशद व व्यापक अध्ययन किया गया है तथा लौकिक और वैदिक संस्कृत का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। अष्टाध्यायी वर्णनात्मक भाषाविज्ञान का प्रथम व अपूर्व कृति है जो आधुनिक भाषाविज्ञान की आधारशिला है। अन्ततः संस्कृत-साहित्य में भाषाविज्ञान के सभी अंगों पर व्यापक कार्य किया गया है जो कि आधुनिक भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, उपकारक तथा पथप्रदर्शक है।

सन्दर्भ :

1. भाषाविज्ञान, पृ0--5. https://mdu.ac.in/UpFiles/UpPdfFiles/2020/Jan/Bhasha%20Vigyan.pdf म0 द0 वि0, रोहतक से आहरित.
2. तिवारी, भोलानाथ, भाषाविज्ञानकोश, पृ0--477. व्योमशेखर, डॉ0 विशन लाल गौड़, पाणिनीय अष्टाध्यायी के रचना-सिद्धान्त, लोकालोक प्रकाशन, 1985, पृ0--40-41 से आहरित.
3. वही।
4. वही
5. वही।
6. द्विवेदी, प्रो0 शिवबालक एवं चतुर्वेदी, प्रो0 अवधेश कुमार, संस्कृत भाषाविज्ञान, ग्रन्थम प्रकाशन,1978, पृ0-11-12.
7. द्विवेदी, प्रो0 शिवबालक एवं चतुर्वेदी, प्रो0 अवधेश कुमार, संस्कृत भाषाविज्ञान, ग्रन्थम प्रकाशन,1978, पृ0-13.
8. वही
9. वही
10. वही
11. वही
12. वही, पृ0-13 -14.
13. वही
14. वाक्यपदीय 1/133.
15. द्विवेदी, प्रो0 शिवबालक एवं चतुर्वेदी, प्रो0 अवधेश कुमार, संस्कृत भाषाविज्ञान, ग्रन्थम प्रकाशन,1978, पृ0-18.
16. वही, पृ0-17.
17. वाग्वै पराच्यव्याकृताऽवदन् ते देवा इन्द्रमब्रुवन् इमां नो वाचं व्याकुरु इति ... तामिन्द्रो मध्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत्0, शास्त्री, डॉ0 विश्वनाथ गो0, भोजदेवकृत सरस्वतीकण्थाभरण, परिमल पब्लिकेशन्स, 1996, पृ0-51 से आहरित.
18. द्विवेदी, प्रो0 शिवबालक एवं चतुर्वेदी, प्रो0 अवधेश कुमार, संस्कृत भाषाविज्ञान, ग्रन्थम प्रकाशन,1978, पृ0-17.
19. वही
20. सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु0 2/7.
21. विधातुस्तस्य लोकानामङ्गोपाङ्गनिबंधनाः।

    विद्याभेदाः प्रतायन्ते ज्ञानसंस्कारहेतवः।। वा0 प0 1/10.

22. वही
23. "ओंकारं पृच्छामः को धातुः किं प्रातिपदिकम्, किं नाम, किमाख्यातम्, किं लिङ्गम्, किं वचनम्, का विभक्तिः, कः प्रत्ययः"। गोपथब्राह्मण 1/25.
24. वही, पृ0-18.
25. शास्त्री, डॉ0 विश्वनाथ गो0, भोजदेवकृत सरस्वतीकण्ठाभरण, परिमल पब्लिकेशन्स, 1996, पृ0-54-55
26. शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य। पा0 शिक्षा 41.
27. स्वरवर्णाद्युच्चारणप्रकारो यत्र शिक्ष्यते सा शिक्षा। आचार्य सायण, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पृ0-49.
28. निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। पा0 शिक्षा 41.
29. रक्षोहागमलघ्वसन्देहाः प्रयोजनम्। महाभाष्य।
30. प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्। महाभाष्य ।
31. प्रथमं छन्दसामङ्गं प्राहुर्व्याकरणं बुधाः। वा0 प0 1/11.
32. भारतीय संस्कृत वैयाकरणों ने ही सर्वप्रथम शब्दरूपों का विश्लेषण, धातु और प्रत्यय का विभेद,प्रत्ययों के कार्य का निर्धारण एवं समस्त रुप से अद्वितीय व्याकरण – पद्धति का सम्यक् एवं पूर्णरुपेण विस्तार किया। प्रो0 मैक्डॉनल, ए0 ए0, इंडियाज पास्ट, मोतीलाल, 1956, पृ0-140.
33. ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच बृहस्पतिरिन्द्रायेन्द्रो भरद्वाजाय भरद्वाज ऋषिभ्य ऋषयो ब्राह्मणेभ्यस्ते खल्वियमक्षरसमाम्नायमित्याचचक्षे। ऋक्तन्त्र।
34. शास्त्री, डॉ0 विश्वनाथ गो0, भोजदेवकृत सरस्वतीकण्ठाभरण, परिमल पब्लिकेशन्स, 1996, पृ0- 78- 79
35. व्योमशेखर, डॉ0 विशन लाल गौड़, पाणिनीय अष्टाध्यायी के रचना-सिद्धान्त, लोकालोक प्रकाशन, 1985, पृ0- 47.
36. सुप्तिङन्तं पदम्। अष्टा0 1.4.14.
37. द्विवेदी, प्रो0 शिवबालक एवं चतुर्वेदी, प्रो0 अवधेश कुमार, संस्कृत भाषाविज्ञान, ग्रन्थम प्रकाशन,1978, पृ0-17.
38. वही
39. व्योमशेखर, डॉ0 विशन लाल गौड़, पाणिनीय अष्टाध्यायी के रचना-सिद्धान्त, लोकालोक प्रकाशन, 1985, पृ0- 42.

•